बेरोज़गारी

बेरोज़गारी

परिचय

- जब एक व्यक्ति सक्रियता से रोज़गार की तलाश करता है लेकिन वह काम पाने में असफल रहता है तो इस अवस्था को बेरोज़गारी कहा जाता है।
- भारत में बेरोज़गारी से संबंधित आँकड़े राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण कार्यालय (NSSO) द्वारा जारी किये जाते हैं।

बेरोज़गारी को बढ़ाने वाले कारक

- तकनीक में तीव्र परिवर्तन, आर्थिक मंदी तथा शारीरिक अक्षमता आदि बेरोज़गारी को बढ़ाती हैं।
- घटती-बढ़ती व्यापारिक गतिविधियाँ, कार्य के प्रति अनिच्छा तथा कार्यस्थल पर भेदभाव आदि कई ऐसे कारक हैं जो सम्मिलित रूप से बेरोज़गारी को बढ़ावा देते हैं।

बेरोज़गारी के प्रकार

पूर्ण बेरोज़गारी तथा अर्द्ध-बेरोज़गारी

- वार्षिक रोज़गार के आकलन के लिये कार्य दिवसों की मानक संख्या 270 है। अगर किसी व्यक्ति के पास 35 से भी कम दिनों का रोज़गार हो तो वार्षिक स्तर पर उसे पूर्ण बेरोज़गार माना जाता है।
- यदि उसके कार्य दिवस 35 से ज़्यादा एवं 135 दिनों से कम हों तो उसे अर्द्ध-बेरोज़गार माना जाएगा। वहीं, 135 दिनों से अधिक के रोज़गार की स्थिति में पूर्ण रोज़गार माना जाता है।

प्रकट बेरोज़गारी (Open Unemployment)

- यदि कोई व्यक्ति किसी उत्पादक कार्य में शामिल ही न हो तो उस स्थिति को प्रकट बेरोज़गारी कहते हैं या यदि कोई व्यक्ति किसी उत्पादक कार्य से अलग-थलग हो तो उसे प्रकट बेरोज़गारी कहते हैं।

प्रच्छन्न बेरोज़गारी (Disguised Unemployment)

- जब किसी काम में ज़रूरत से ज़्यादा व्यक्ति शामिल रहते हैं, जबकि उतने लोगों की ज़रूरत नहीं होती है तो यह स्थिति प्रच्छन्न बेरोज़गारी कहलाती है।
- प्रच्छन्न बेरोज़गारी कृषि क्षेत्र में अधिक देखने को मिलती है क्योंकि जनसंख्या एवं खेतों का उपविभाजन भी पीढ़ी-दर-पीढ़ी बढ़ता जाता है। साथ ही गैर-कृषि रोज़गारों की संख्या पर्याप्त रूप से नहीं बढ़ती है।
- इसमें श्रमिक की सीमांत उत्पादकता शून्य होती है अर्थात् उत्पादन में उनका योगदान नगण्य होता है।

संरचनात्मक बेरोज़गारी (Structural Unemployment)

- यदि देश की उत्पादक संस्थाओं की संख्या में कमी, तकनीकी परिवर्तन आदि के कारण रोज़गार के अवसर सीमित रह जाते हों और श्रमशक्ति का एक बड़ा वर्ग बेरोज़गार हो जाता है तो इस समस्या को संरचनात्मक बेरोज़गारी कहा जाता है।
- यह एक दीर्घकालीन समस्या है। उत्पादक संस्थाओं की संख्या में जड़ता बने रहने एवं जनसंख्या के बढ़ते जाने के कारण संरचनात्मक बेरोज़गारी बढ़ती है।

चक्रीय बेरोज़गारी (Cyclic Unemployment)

- उत्पादक संस्थाओं में समायोजन के दौरान अथवा बाज़ार परिवेश में परिवर्तन के दौरान रोज़गार की संख्या में होने वाली अल्पकालिक गिरावट के फलस्वरूप उत्पन्न बेरोज़गारी को चक्रीय बेरोज़गारी कहते हैं।
- यह बेरोज़गारी अल्पकालिक होती है। वैश्विक स्तर पर विकसित देशों में चक्रीय बेरोज़गारी ज़्यादा देखने को मिलती है।
- वर्तमान में यूरोप, अमेरिका, जापान में बाज़ार मांग के कम हो जाने के कारण बेरोज़गारी बढ़ गई है। वहीं, यूरोप के पुर्तगाल, इटली, आयरलैंड, ग्रीस, स्पेन (PIIGS) जैसे देशों में भी बेरोज़गारी अधिक है। ये देश बेरोज़गारी के दुष्चक्र के शिकार हैं, इसे ही 'पिग्स संकट' कहा जाता है।

ऐच्छिक बेरोज़गारी (Voluntary Unemployment)

- जब लोग वर्तमान वेतन दर पर काम करने के लिये तैयार नहीं होते हैं और उन्हें अपनी संपत्ति या अन्य स्रोतों से निरंतर आमदनी होती रहती है जिसके कारण उन्हें काम करने की ज़रूरत महसूस नहीं होती है, इस स्थिति को ऐच्छिक बेरोज़गारी कहा जाता है।

अनैच्छिक बेरोज़गारी (Involuntary Unemployment)

- जब कोई व्यक्ति प्रचलित दर पर काम करने की इच्छा रखता हो किंतु कार्य की उपलब्धता न हो, तो इस स्थिति को अनैच्छिक बेरोज़गारी कहा जाता है।

मौसमी बेरोज़गारी (Seasonal Unemployment)

- जब हम नियोजित व्यक्ति की बात करते हैं तो हमारा तात्पर्य उन लोगों से होता है जो वर्ष भर काम करते हैं। कृषि जैसे क्षेत्र में काम मौसमी होता है लेकिन कृषि संबंधी गतिविधियाँ वर्ष भर चलती रहती हैं, जैसे- फसल कटाई के समय, बीज बोने, फसल उगाने, निराई करते समय काम करने के लिये ज़्यादा लोगों की आवश्यकता होती है इस कारण ऐसे समय में रोज़गार बढ़ जाता है। एक बार जब ये कार्य खत्म हो जाते हैं तो कृषि क्षेत्र से जुड़े कामगार विशेषकर भूमिहीन, बेरोज़गार हो जाते हैं। इस प्रकार की बेरोज़गारी को मौसमी बेरोज़गारी कहते हैं।

अस्थायी बेरोज़गारी (Frictional Unemployment)

- यह बेरोज़गारी उस समय-विशेष के दौरान उत्पन्न होती है जब श्रमिक एक उत्पादन प्रक्रिया से दूसरी प्रक्रिया की ओर चले जाते हैं।
- नियोक्ता कामगारों की खोज में रहते हैं और कामगार रोज़गार की तलाश में जब तक ये दोनों नहीं मिलते तब तक बेरोज़गारी बनी रहती है। सूचना का अभाव तथा भौगोलिक दूरी इस स्थिति को और भी जटिल बना देती है।

बेरोज़गारी के कारण

- जनसंख्या की तीव्र वृद्धि बेरोज़गारी बढ़ाने वाला एक प्रमुख कारक है। भारत में जनसंख्या में वृद्धि दर की अपेक्षा रोज़गार वृद्धि दर कम है।
- भारत में सीमित भूमि संसाधन हैं जबकि जनसंख्या तेज़ी से बढ़ती जा रही है। ग्रामीण क्षेत्रों के लोग प्रत्यक्ष रूप से ज़मीन पर निर्भर हैं।
- भारत में बड़ी संख्या में श्रमबल कृषि क्षेत्र में संलग्न है और कृषि के कार्य मौसमी होते हैं जिससे यहाँ मौसमी बेरोज़गारी उत्पन्न होती है।
- भारत में शिक्षा व्यवस्था में भी कई दोष मौजूद हैं। यह उद्यमिता एवं गुणवत्ता का पर्याप्त विकास नहीं करती है। इससे अधिकांश लोग शिक्षित बेरोज़गारी हो जाते हैं।
- भारत सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाएँ भी जनसंख्या वृद्धि दर के अनुरूप नहीं हैं। इससे रोज़गार प्राप्त करने की संभावना बहुत कम हो जाती है।
- भारत में पर्याप्त औद्योगिक क्षेत्र का विकास नहीं हुआ है।

//

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/berojgaari